Hindi A: literature – Standard level – Paper 1
Hindi A : littérature – Niveau moyen – Épreuve 1
Hindi A: literatura – Nivel medio – Prueba 1

Wednesday 4 May 2016 (afternoon)
Mercredi 4 mai 2016 (après-midi)
Miércoles 4 de mayo de 2016 (tarde)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

Instructions to candidates

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a guided literary analysis on one passage only. In your answer you must address both of the guiding questions provided.
- The maximum mark for this examination paper is **[20 marks]**.

Instructions destinées aux candidats

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez une analyse littéraire dirigée d'un seul des passages. Les deux questions d'orientation fournies doivent être traitées dans votre réponse.
- Le nombre maximum de points pour cette épreuve d'examen est de **[20 points]**.

Instrucciones para los alumnos

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un análisis literario guiado sobre un solo pasaje. Debe abordar las dos preguntas de orientación en su respuesta.
- La puntuación máxima para esta prueba de examen es **[20 puntos]**.

2216 – 0095

© International Baccalaureate Organization 2016

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (1) तथा (2)। इन दोनों में से किसी **एक** पर साहित्यिक व्याख्या लिखिए। अपने उत्तर में आप दिए गए दोनों सहायक प्रश्नों का समावेश करें।

1.

अभिषेक मिस्टर तनेजा को आँखे फाड़े देख रहा था। तनेजा ने एक अभिभावक की तरह उसे समझाया, देखो, युनिफ़ोर्म एकदम साफ़ होनी चाहिए। अच्छी तरह नहा धोकर, दाढ़ी बनाकर एकदम फ्रेश होकर आना। भैया जी इन सब चीजों पर बहुत ध्यान देते हैं। भैया जी यानी कंपनी के मालिक मंगलमूर्ति। मंगलमूर्ति ने अपने दम पर मंगल ग्रुप ऑफ कंपनीज का बड़ा साम्राज्य खड़ा किया था। सॉफ्टवेयर, रिटेल और रीयल स्टेट में यह ग्रुप तेज़ी से उभर रहा था। भैया जी को लेकर तरह-तरह के क़िस्से प्रचलित थे। कहा जाता है कि भैया जी मैट्रिक में फ़ेल हो गए थे क्योंकि उन्हें गणित ज़रा था पसंद नहीं था। भैया जी ने किसी तरह अगली बार मैट्रिक की परीक्षा पास की। उन्होंने माँ-बाप से साफ कह दिया कि वे आगे नहीं पढ़ेंगे क्योंकि वे लीक से हटकर कुछ करना चाहते हैं। उन्होंने अपने पिता से पच्चीस हज़ार रुपए मांगे और स्टेशनरी के कुछ समान खरीदे और अपने सभी दोस्तों के घर जाकर उन्हें बेच आए। फिर कुछ स्कूलों से संपर्क साधा और उन्हें नियमित रूप से सप्लाई करने लगे। कुछ ही दिनों में एक स्कूल ने उन्हें युनिफ़ोर्म सप्लाई का भी ऑर्डर दे दिया। फिर भैया जी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। भैया जी का आज का व्यवसाय पच्चीस हज़ार करोड़ पर पहुँचने वाला था। भैया जी की सफलता की गाथा अभिषेक को आश्वस्ति से भर देती थी। लगता था कोई उसकी पीठ थपथपा रहा है। भैया जी में वह अपना प्रतिबिंब देखता था। और अब भैया जी उसके सामने थे। चेहरे पर गज़ब चमक थी। अभिषेक चमत्कृत होकर सुन रहा था। वह तय नहीं कर पा रहा था कि भैया जी एक बिज़नेसमैन हैं या धर्मगुरु। भैया जी बोल रहे थे, मेरा कारोबार क्यों आगे बढ़ा क्योंकि मैंने उसे बिज़नेस की तरह नहीं एक ईश्वरीय उपक्रम की तरह देखा। मैं वह कर रहा हूँ जो ईश्वरीय शक्तियाँ मुझसे चाहती हैं। आप सब उसका हिस्सा हैं। आप सब से मुझे प्रेरणा और ताकत मिलती है। मीटिंग खत्म होते ही भैया जी से आशीर्वाद लेने का सिलसिला शुरू हुआ। अभिषेक को भी उन्होंने गले से लगा लिया। आखिरकार रोज़ की तरह रात में उसकी मुलाक़ात सुमित से फ़ेसबुक पर हुई। चैट करते हुए उसने विस्तार से सब कुछ बताया। सुमित ने लिखा, “वैसे एक बात है तूने भैया जी के बारे में जो कुछ बताया है उससे मुझे थोड़ा शक हो रहा है। वह मुझे शातिर लग रहा है। देख अपने कर्मचारियों को बेवकूफ बनाने का यह सबसे अच्छा तरीका है कि उनके साथ भावनात्मक संबंध बना लिया जाए। यह शोषण का एक महीन तरीका है।” तू तो यार हर बात में ऐसे ही सोचता है। मैंने सुना है कि भैया जी ने अपने एक नौकर में टैलेंट देखा तो उसे वाइस प्रेसिडेंट बना दिया। “बिल्कुल बनाया होगा। असल में तू बड़ा इमोशनल है। जल्द ही तुझे भैया जी के बारे में सब कुछ पता चल जाएगा।” दोनों मॉनिटर पर लिखे जाते शब्दों में एक दूसरे की धड़कन महसूस कर रहे थे। सतवीर तनेजा उसके सीनियर मैनेजर। सबसे पहले उसने उन्हीं की मेल खोली। मेल पढ़कर वह सन्न रह गया। बेचैन होकर बाहर निकला और सीधा तनेजा साहब के कैबिन में पहुंचा। अभिषेक ने थोड़ा सकुचाते हुए कहा, “सर वो मेल मुझे मिली। वो मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि...।” “हाँ, वो डेड हेडस की लिस्ट दे दो यार। ये मैनेजमेंट का डिसीजन है।” “ये कैसा डिसीजन है। एक तरफ तो कहा जाता है कि हम सब एक परिवार हैं। तो अपने कुछ फेमिली मेम्बर्स को बाहर कैसे कर दें।” “देखो ये परिवार वगैरह की बातें, यह सब दिखाने के लिए हैं। इसके पीछे मकसद यह है कि यहाँ इम्प्लाइज का कोई यूनियन न बने।” “पर सर मैं जिनके साथ काम कर रहा हूँ उन्हें अचानक कैसे निकाल दूँ।” समझ में नहीं आता कि तुम मैनेजमेंट की अपनी सारी पढ़ाई भूल कैसे गए।

ठीक है कि एक ग्रुप लीडर के तौर पर तुम सेंसेटिव हो पर इसका मतलब यह नहीं कि अपने इम्प्लाइज से इमोशनली अटैच भी हो जाओ। एक बॉस को इमोशनल दिखना है पर होना नहीं है। तुम यहाँ नौकरी करने आए हो रिश्ते जोड़ने नहीं। तनेजा साहब ने झुँझलाकर कहा। अभिषेक को कोई जवाब नहीं सूझा। अपने को मनाने की कोशिश करता हुआ वह अपनी सीट पर लौटा। तभी उसके भीतर भक सी जैसे एक रोशनी सी जली। क्यों न एक बार भैया जी से मिलकर देखा जाए। क्या ठिकाना छंटनी का फैसला उनके लेवल पर हुआ ही न हो। संभव है यह सब बीच के मैनजरों की बदमाशी हो। जो भी हो, एक बार उनसे मिला जाए। वह तुरंत मंगल दस्ता विभाग पहुँचा। वहाँ अजीब पहलवान टाइप के लोग उसे दिखे। अभिषेक ने फार्म भर दिया। ठीक है आपको मंगलग्रुप पर बता दिया जाएगा। मंगल दस्ता से बाहर निकलते ही उसका मोबाइल बजा। तनेजा साहब का फोन था। तुम मेनटेनेंस में मेजर भूषण सिंह को रिपोर्ट करो। मतलब सर? मतलब यह कि तुम्हारा ट्रान्सफर मेनटेनेंस में कर दिया गया है। अभिषेक तेजी से अपनी सीट पर आया। वहाँ विनीत शुक्ला खड़े थे। उसने उन्हें अपने दराज की चाबियाँ सौंप दी। इस तरह सत्ता का हस्तांतरण हो गया। अभिषेक ने ज़ोर से कहना शुरू किया ताकि सब लोग सुन लें, “हमारी कंपनी ब्यूटी हंट करने जा रही है।” बताइए, एक तरफ कहा जा रहा है कि कंपनी क्राइसिस में है और दूसरी तरफ करोड़ों रुपए इस पर खर्च होंगे। अभिषेक यह कहते-कहते रुक गया कि कंपनी में छंटनी होने वाली है।

संजयकुन्दन, मार्च-मई (2014)

(क) कहानी में प्रस्तुत कथानायक की मन:स्थिति और परिस्थिति के बारे में आप क्या कहना चाहते चाहते हैं ?

(ख) लेखक द्वारा कहानी कहने के ढंग और पाठक पर कहानी के प्रभाव के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?

2.

घोंसला

काँटेदार पेड़ पर लटकता
बया का घोंसला
कारीगरी और कलात्मकता का
सबसे श्रेष्ठ नमूना है।
आदमी भी तो ज़िंदगी भर
ऐसे ही एक सुंदर घोंसले/घर के लिए
ताने-बाने बुनता रहता है
“घर”, “मेरा घर”, “प्यारा घर”।
घर शब्द ही मुँह में
मिश्री घुलने का आभास देता है
दिनभर की मेहनत के बाद
घर लौटने का एहसास
कुछ ऐसा जैसे
माँ बाहें फैलाए
अपने बच्चे को बुला रही हो।
पर हर आदमी में बसता है
एक “जिप्सी”
जो उसे बार-बार उकसाता है
भटकने के लिए
तभी तो हर आदमी घर छोड़कर बाहर
निकलना चाहता है
घूमना चाहता है
पूरी दुनिया देखना चाहता है
अलग-अलग रोमांचक, आह्लादक अनुभव
प्राप्त करना चाहता है।
पर जब भटकते-भटकते थक जाता है
तब याद आता है “घर”
घर में बसते आत्मीय स्वजन
उनका उष्मामय प्रेम
दरवाजे पर स्वागत करती हुई
स्नेहिल मुस्कान!
और तब आदमी के भीतर की
बया फुदकने लगती है
क्योंकि हर आदमी में
बसती है एक “बया”!

डॉ मालिनी गौतम, युग वंशिका, अक्टूबर (2012)

(क) कविता के शीर्षक पर अपने विचार प्रकट कीजिये और बताइये कि कविता के संदर्भ में यह कहाँ तक सार्थक है ?

(ख) कविता की भाषा और रचना शिल्प के प्रभाव पर अपने विचार प्रकट कीजिए। ?